मुख्य संरक्षक : श्री कर्मवीर शर्मा
(आयुक्त, उच्च शिक्षा विभाग भोपाल म.प्र.)

संरक्षक मंडल : डॉ.राजकुमार आचार्य
(कुलपति, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.रीवा)
डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव
(अति.संचालक, उच्च शिक्षा रीवा संभाग रीवा)

संरक्षक : डॉ. रमेश सिंह वाटे (प्राचार्य)

संयोजक : डॉ.जितेन्द्र सिंह धुर्वे (सहा.प्राध्यापक)

सह संयोजक : श्री राधेश्याम सोलंकी (सहा.प्राध्यापक)

सचिव : श्री राज कुमार सिंह (सहा.प्राध्यापक)

सह सचिव : सुश्री संगीता उइके (सहा.प्राध्यापक)

I.Q.A.C प्रभारी : श्री श्यामबली कुमार (ग्रंथपाल)

विश्व बैंक प्रभारी : श्री गजेन्द्र कुमार सिंह (सहा.प्राध्यापक)

–:: राष्ट्रीय सलाहकार समिति ::–

1. डॉ.दिनेश कुशवाह, विभागाध्यक्ष(हिन्दी), अ.प्र.सिं.विश्वविद्यालय रीवा
2. डॉ. ऊषा नीलम, प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय शहडोल
3. प्रो. परमानन्द तिवारी, पूर्व प्राचार्य, शास.महाविद्यालय बिरसिंहपुर पाली
4. डॉ.जे.के.संत, प्राचार्य, शासकीय तुलसी अग्रणी महाविद्यालय अनूपपुर
5. डॉ.जितेन्द्र सिंह, सहा.प्राध्यापक, इं.गां.रा.ज.जा.वि.वि.अमरकंटक

–:: आयोजन समिति ::–

1. डॉ.वी.के.सोनवानी, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय कोतमा, अनूपपुर
2. डॉ.डी.पी.शार्मे, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय पुष्पराजगढ़, अनूपपुर
3. डॉ.विवेक कुमार पटेल, विभागाध्यक्ष वाणिज्य, शा.एस.के.महा.मऊगंज रीवा
4. डॉ.रश्मि चौहान, सहा.प्राध्यापक, शास.महाविद्यालय कसरावद, खरगोन
5. डॉ.आई.के.बेग, सहा.प्राध्यापक, शास.नेहरू महाविद्यालय बुढ़ार, शहडोल

–:: व्यवस्थापक समिति ::–

1. श्री देवेन्द्र धुर्वे, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
2. श्री पहलवान सिंह मीणा, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
3. डॉ.नीरज जायसवाल, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
4. डॉ.खुशबू खान, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
5. श्री पुष्पराज सिंह बघेल, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
6. श्री बृजेश कुमार द्विवेदी, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
7. डॉ.अनीता पाण्डेय, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
8. श्री विशेषर सिंह, प्रयो.तकनीशियन, शा.महाविद्यालय जैतहरी
9. श्री अशोक राठौर, शासकीय महाविद्यालय जैतहरी

शासकीय महाविद्यालय जैतहरी

जिला–अनूपपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

दिनांक 16–17 दिसम्बर 2022

"हरिशंकर परसाई की रचनाओं में यथार्थ की अभिव्यक्ति–विविध संदर्भ"

पंजीयन प्रपत्र

नाम : .....

पदनाम : .....

संस्था : .....

.....

पता : .....

.....

ई–मेल .....

मोबाइल नं.: .....

शोध–पत्र का शीर्षक : .....

.....

मैं प्रमाणित करता/करती हूं कि मेरा शोध पत्र मौलिक और अप्रकाशित है।

हस्ताक्षर .....

नाम .....

ट्रांजेक्शन आईडी .....

.....

दिनांक .....

राशि .....

"हरिशंकर परसाई की रचनाओं में यथार्थ की अभिव्यक्ति–विविध संदर्भ"

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हरिशंकर परसाई शताब्दी वर्ष 2022

दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

दिनांक 16–17 दिसम्बर 2022

॥ प्रायोजक ॥

विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत
मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा गुणवत्ता परियोजना
(MPHEQIP) में प्रायोजित

॥ आयोजक ॥

हिन्दी विभाग

॥ संरक्षक॥

डॉ. रमेश सिंह वाटे

–: आयोजन स्थल :–

शासकीय महाविद्यालय जैतहरी
जिला–अनूपपुर (म.प्र.)

हरिशंकर परसाई की रचनाओं मे यथार्थ की अभिव्यक्तिः विविध सन्दर्भ

मनुष्य के जीवन की गतिमयता का अंदाजा किसी को नही है। किसी कवि ने लिखा है "मै जिस स्थल पर आकर खडा हूँ ,कल इसी जगह पर पाना मुझको मुश्किल है "। मानव के विकास यात्रा के भाँति हमारे भाषाओं के शब्द, यात्रा जीवन-व्यापार से चलती हुई विविध साहित्यिक रुपों मे कब कैसे ढल गई यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है। हिन्दी साहित्य के विभिन्नकाल खण्डो के विभाजन मे आदिकाल से लेकर आधुनिक काल और उत्तर-आधुनिकता दौर तक हिन्दी के नव-रसों में हास्य रस को स्थान मिलता रहा है। यह स्वरुप कालांतर मे अभिधा लक्षणा से हटकर व्यंजना के रुप मे सामने आया। यही व्यंजना कालांतर मे विविध स्वरुपो के साथ व्यंग्य शैली विस्तीर्ण हुई। तुलसी के रामचरितमानस मे भी शिव-पांवती के विवाह के अवसर पर यह चौपाई उधित की जा सकती है :-"हरि के विंगवचन नही जाही, और मन ही मन महेश मुस्काई। वर अनुहार बारात न भाई, हसि करियहो पर पुरजाई"। आधुनिक दौर में भौतिकता की मारा-मारी मे सच कहने का साहस किसी मे नही है। कवि साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक विद्रुपदाओं को लेखांकित कर रहे हैं। रचनाकारों के लिये तमाम विसंगतियों, भ्रष्टाचार, राजनीतिक उठापटक, अत्याचार और महत्वांकाक्षा जैसे मतियों के कारण उपज रही कई त्रासदियों से पर्याप्त दिखने लगे। रचनाकारों ने व्यंग्य का सहारा लिया जा रहा है जो सच है, पर दिखता कुछ और है यही व्यंग्य विधा का कौशल है, और हमारे साहित्य मे कई व्यंग्यकार हुये है। जिन्हे वर्तमान समय मे परसाई, शरद जोशी,नवल शुक्ला आदि कई लेखक व्यंग्यकार सामने है। वस्तुतः हरिशंकर परसाई मध्यप्रदेश में पले बढे, यह वर्ष इस व्यंग्यकार का शताब्दी वर्ष है जिससे उनकी रचनाओं और उनके रचना शीर्षक के साथ समकालिक रचनाकारों की व्यंग्य विधा पर विमर्श होगा तथा केन्द्रीय विषय के रुप मे हरिशंकर परसाई जी के कविता, कहानी के सभी रुपों पर चर्चा होगी ।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य मे यथार्थ बोध का विश्लेषण किया गया है । यथार्थ कृत्यात्मकता मे निहित होता है। इसलिये उसे केवल क्रियात्मक रुप से जाना जा सकता है। हर वह तथ्य जो क्रियमाण या प्रवृत्तमान है, यथार्थ है। यथार्थ का प्रकटीकरण गति या प्रवृत्ति के द्वारा होता है। इसलिए गति या प्रवृत्ति यथार्थ के रुपाकार है। जो घटित हो रहा है वह यथार्थ है और जिसके घटित होने की संभाव्यता है वह संभावना है। यथार्थ अस्तित्वभूत होता है, उसका अवबोधन इन्द्रियों के माध्यम से संभव है, लेकिन संभावना परोक्ष और अनगढ होती है। यथार्थ एक साकार संभावना होती है, जब कि संभावना एक गर्भित यथार्थ होता है। जिसके अवतरण का न तो समय निश्चित होता है और न स्वयं अवतरण। परसाई जी के व्यंग्य यथार्थ बोध के साथ-साथ पाठक ने आक्रोश को जन्म देते है ताकि रुढ परिस्थितियों को बदला जा सके । परसाई जी ने कबीर, तुलसी, भारतेन्दु, नागार्जुन आदि की परम्पराओ को केवल आगे ही नही बढाया बल्कि व्यंग्य को स्वतंत्र विधा के तौर पर स्थापित करने पर भी अहम भूमिका निभाई।

।। संगोष्ठी के उपविषय ।।

1. व्यवहारिक जीवन मे परसाई जी।
2. परसाई जी का राजनीतिक जीवन दृष्टि।
3. परसाई जी के सामाजिक संचेतना और व्यंग्य का स्वरूप।
4. आर्थिक परवेश और कागजी विकास के आयाम।
5. लोक जीवन के विभिन्न पक्षो मे परसाई जी की दृष्टि।
6. परसाई जी के समकालीन अन्य व्यंग्यकार का साहित्यिक चित्रण।

:: शोध पत्र भेजने का पता ::

शोध आलेख आंमत्रण पत्रकारिता के विविध संदर्भानुसार आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक आंमत्रित विद्वानो/प्राध्यापकों/अतिथि विद्वानों/शोधार्थियों/विद्यार्थियों एवं जनसंचार माध्यम के प्रतिनिधियों से आग्रह है कि अपने शोध आलेख एवं सारांश जो 400 शब्दों में हो जिसको दिनांक 13 दिसंबर 2022 तक

ई-मेल- hegcjaianu@mp.gov.in,
visheshwarg@gmail.com, jittudhurve1jd@gmail.com,
rathourashok90@gmail.com

के माध्यम से प्रेषित करें। विलंब से प्राप्त आलेखों को प्रकाशित करने में कठिनाई होगी। आलेखों की पाण्डुलिपि आप अपने साथ अथवा पोस्ट के माध्यम से भी प्रेषित कर सकते है। आलेख देवनागरी एवं रोमन विधि में हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में स्वीकार्य होंगे। आलेखों को प्राप्त स्मारिका में प्रकाशित करने का प्रावधान है।

पंजीयन शुल्क

प्राध्यापक/सहा.प्राध्यापकों/अतिथि विद्वानों के लिये - 500/- रूपये
शोधार्थियों तथा छात्रों के लिये - 300/- रूपये

सचिव जनभागीदारी समिति सेन्ट्रल बैक ऑफ इन्डिया जैतहरी
खाता नं0-3365221876
आई.एफ.सी.कोड CBIN0281188 अथवा
शोध संगोष्ठी के प्रारंम्भ मे नकद जमा कराया जा सकेगा,
ऑनलाईन पंजीयन की अंतिम तिथि - 13 दिसम्बर 2022 है।
आवास सुविधा उपलब्ध है।

पंजीयन लिंक - https://forms.gle/nF3Jh11JTZSenqQ1
व्हाटसएप लिंक- https://chat.whatsapp.com/Fr9sMhszCxoBUWzlQ2hsij

शोध संगोष्ठी में प्रतिभागियों को यात्रा व्यय उनकी निजी संस्थाओं/संसाधनों से देय होगा। स्त्रोत व्यक्तियों को ही यात्रा व्यय दिया जायेगा।

महाविद्यालय का परिचय

परिचय-शासकीय महाविद्यालय जैतहरी जिला-अनूपपुर में पुराने शहडोल जिले का भाग है यह अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से सम्बद्ध है। इसकी स्थापना मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा 02 जुलाई 2012 में की गई नवीन महाविद्यालय निरंतर विकास की दिशा में प्रयत्नशील है। जैतहरी रेल अथवा सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है हवाई मार्ग के लिये रायपुर-जबलपुर हवाई अड्डे क्रमशः 340-280 किमी. दूरी पर है। यहां मात्र पैसेन्जर गाड़ियां जो भोपाल इंदौर विलासपुर शहरो को जोड़ती है सभी फॉस्ट एक्सप्रेस गाड़ियां समीपी स्टेशन अनूपपुर 15 किमी. पेन्ड्रारोड 35 किमी दूरी पर रुकती है जहां से जैतहरी पहुंचा जा सकता है जैतहरी द.पू.म. रेल्वे कटनी बिलासपुर जंक्शन के मध्य अनूपपुर जंक्शन के पास है। यहां से पुण्य सलिला नर्मदा की उद्गम स्थली अमरकंटक जैव विविधता से परिपूर्ण है दूरी 70 किमी. राष्ट्रीय उद्यान बांधवगढ़ 135 किमी दूरी पर स्थित है।

।। कार्यक्रम ।।

दिनांक 16.12.2022

पंजीयन एवं स्वल्पाहार	प्रातः 09.00-11.00
प्रथम सत्र (उदघाटन)	प्रातः 11.00-12.30
भोजन	दोप. 12.30-01.30
द्वितीय सत्र (तकनीकी)	दोप. 02.00-03.50
शोध छात्रों हेतु विशेष तकनीकी सत्र	दोप. 03.30-05.30

दिनांक 17.12.2022

तृतीय सत्र (तकनीकी)	प्रातः 11.00-12.30
भोजन	प्रातः 12.30-01.30
चतुर्थ सत्र (तकनीकी)	दोप. 02.00-03.30
समापन	दोप. 04.00-05.00